ISSN (Online) 2582-9327

IJARSCMT

International Journal of Advanced Research in Science, Commerce, Management and Technology

Impact Factor: 5.781

Volume 3, Issue 9, September 2022

शिवानी के उपन्यासों में नारी चेतना : एक अध्ययन

Vivekanand Pandey

Awadhesh Pratap Singh University, Rewa, Madhya Pradesh, India[2]

प्रस्तावना–

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी हैं। प्रकृति–पुरुष दोनों ही महत्वपूर्ण हैं।समाज में रहकर ही दोनों अपने कार्यों, इच्छाओ, लक्ष्यों को पूरा कर सकते हैं।मनुष्य समाज कोंआगे बढ़ाने के लिए स्त्री– पुरुष दोनों की भागीदारी समान रूप से आवश्यक हैं।दोनों में से एक भी पक्ष कमजोर हो गया तो मानव समाज का योग्य विकास नहीं होगा,बल्कि अहित होगा।

मनुष्य समाज का आधा अंग नारी है।शिवानी साहित्य में नारी चेतना को अध्ययन का विषय बनाया गया है।विश्व में स्त्री– पुरुष हैं,मगर दोनों सदैव एक जैसे ही नहीं होते दोनों में विभिन्न विशेषताएँ,योग्यताएँ, कमजोरियाँदेखने को मिलती हैं। प्रत्येक स्त्री, प्रत्येक पुरुष समान नहीं होते।फिर–भी सदियों से सिर्फ नारी को ही कमजोर मानकर शोषण का शिकार बनाया गया । लाचार, असहाय, विवश, दमित, दलित अवस्था में रखा गया।

उद्देश्य–

स्त्री–पुरुष दोनों में मूल मानवगत वृत्तियाँ समान होती हैं।मगर दोनों के अनुभव संस्कार भिन्न होते हैं। जिंदगी में कुछ अनुभव ऐसे होते हैं– जिनसे केवल स्त्री ही गुजरती है। यह अनुभव ही उसे पुरुष से अलग एवं विशेष बनाता है,और वह विशेषता है– मातृत्व की विशेषता पूरी मनुष्य जाति के हितार्थमातृत्व को सफल समृद्ध, बलवान, निडर बनाने के लिए स्त्री–जागृति चेतना–मुक्ति आवश्यक है,माता रूप सदैव माननीय रहा है।

वैदिक काल में स्त्रियों की स्थिति बेहतर थी मगर क्रमानुसार पुराण काल, महाकाव्य काल,मध्यकाल तक आते–आते स्त्रियों की स्थिति में गिरावट आई। इसाई मिशनरियों और ब्रिटिश शासन के प्रभाव स्वरूप हिंदू धर्म के मूलभूत सिद्धांत,तथ्य परिवर्तित हुए।आज तो हमें स्त्रियों का बदला हुआ नजर आता है वह मध्यकाल रीतिकाल की स्थितियों से कहीबेहतर हैआधुनिक काल में नारी का शिक्षितसंघर्षशील, कामकाजी रूप नजर आता है। इसके पीछे ब्रह्म समाज,आर्य समाज, प्रार्थना समाज, थियोसॉफिकल सोसायटी धार्मिक सामाजिकशैक्षणिक– लोक जागरण के आंदोलनों, सुधारवादी आंदोलनों का परिणाम है। अमरीकी नारीवाद–मुक्ति आंदोलन केप्रभाव स्वरूप और गांधी जी के स्वतंत्रता संग्राम के आंदोलन कीफल स्वरुप स्त्रियों में अपने अस्तित्व के प्रति जागृति आई।भारतीय स्त्रियों को समान मताधिकार भी अमरीकी स्त्रियों से पहले मिला।और नारी की सामाजिक जागृति भी बढी।गांधीजी, राजाराममोहन राय,केशव चंद्र सेन, दयानंद सरस्वती, डॉ बाबासाहेब अंबेडकर, ज्योतिबा फुले,पंडित रमाबाई, एनी बेसेंट, विजयलक्ष्मी पंडित,सरोजिनी नायडू, इंदिरा गांधी और उस काल के अनेक नामी –अनामी स्त्री पुरुषों ने स्त्रियों की स्थिति के बारे में जागृति बताई।

सिर्फ साहित्य के क्षेत्र में ही नहीं, केवल राष्ट्रीय स्तर पर नहीं बल्कि वैश्विक स्तर पर आज नारी विमर्श छाया जा रहा है। और वर्तमान दौर में प्रायः नारी लेखकों को ही इसका यश मिल रहा है, लेकिन इस बात की आवश्यकता है कि पूरे भारत वर्ष पूरे विश्व में उन तमाम स्त्री–पुरुष लेखको भी इसी नारी विमर्श चेतना– मुक्ति के इतिहास का अंग बनाया जाय,जिनकी लेखनी ने नारी के प्रति एक सकारात्मक भूमिका अदा की है, और करते रहे हैं।

शिवानी के उपन्यासों में स्पर्धा, ईर्ष्या, प्रेम, बलात्कार, संदेह, निराशा, सहानुभूति, उपेक्षा, विद्रोह भावता जिला आदि मानसिक भाव के प्रति नारी चेतना का मनोवैज्ञानिक विश्लेषण हुआ है इन भावों से गुजरते हुए पात्रों की कार्यों प्रिया प्रतिक्रियाओं को मनोवैज्ञानिक विश्लेषण के माध्यम से उजागर किया गया हैव्यक्ति के विकास में समाज का महत्वपूर्ण योग है परिस्थितियों के

बदलाव ने युग बदलाव ने व्यक्ति के विचारों में मानसिक दृष्टिकोण में काफी परिवर्तन कर दिया है।फलता पारिवारिक वयक्तिक मूल्यों में परिवर्तन भी हुआ हैमानसिक अंतर्द्वंद व्यक्ति के क्रियाकलापोंभाव को प्रभावित करता हैउसका परिणाम व्यवहार पर समाज पर होता है व्यक्ति की सबसे महत्वपूर्ण जटिल समस्याएँ हैं–प्रेम– विवाह, सेक्स,पाप– पुण्य, नैतिक– अनैतिक, ईर्ष्या, कुंठा,लघुताइनसभीभावों–समस्याओंकोशिवानीके नारी पात्रों ने परंपरा से हटकर नया अर्थ दिया है। स्वस्थ मानवीय गरिमापूर्ण वास्तविक सुझाव दिए गए हैं।

नारी चेतना– मुक्ति का अर्थ यही है कि पुरुषों की संकीर्ण मानसिकता से मुक्ति और अपने आप को मानवीय अधिकारों से युक्त मानव स्थापित करना, अपने अस्तित्व की रक्षा करना,सन 1960 के बाद नारीवादी महिला लेखिकाओं की श्रृंखला सक्रिय हुई।इन लेखिकाओं ने हिंदी साहित्य को ऐसी कृतियाँ दी हैं, जिनमें उन्होंने अपनी अनुभूतियोंके साथ–साथ समाज की समस्याओं एवं समाज के विभिन्न वर्गों की नारियों को अपने उपन्यासों का आधार बनाया। साठोत्तरी महिला लेखिकाओं ने नारी की टूटने बिखरने की गाथाओं को साहित्य का विषय बनाया,समस्याएँ चित्रित की, समाधान भी बताये।

शिवानी जी परिवार की अखंडता में विश्वास रख करने वाली लेखिका हैं परिवार को टूटता हुआ बचाने में स्त्री का महत्वपूर्ण योगदान है चल खुसरो घर आपने में परिवार की आर्थिक स्थिति की समस्या है भारतीय पारिवारिक स्थिति ऐसी है कि कमाने का काम अर्थ उपार्जन का काम पुरुष के हिस्से में है मगर जब पुरुष नहीं रहे तो इस्त्री भी अर्थ उपार्जन में अपना महत्वपूर्ण योगदान दे सकती है नायिका कुमुद पिताजी के मरने के बाद ट्यूशन करके नौकरी करके घर की आर्थिक स्थिति को संपन्न कर देती हैमगर कुमुद की मां ने कभी खुद की शादी के बारे में सोचा ही नहीं कुमुद चली जाए तो घर में कमाने वाला नहीं रहेगा इस प्रकार कुमुद को अपने अरमानों को भूल जाना पड़ता है आर्थिक असमानता की वजह से व्यक्ति में लघुता हीनता का भाव पैदा होजाताहै।

हमारे समाज में अनेक समस्याएँ मुँह बाए खड़ी है। समाज में व्याप्त आर्थिक समस्या,अनमेल विवाह, मूल्यहीनता,बलात्कार, भ्रष्टाचार, दहेज,जाति–प्रथा धार्मिक ढोंग, वृद्धों की अवहेलना, वेश्याजीवन और कुष्ठरोग, राजनीतिक नेताओं केषडयंत्र आदि ।उपर्युक्तसारी समस्याएँशिवानी के उपन्यासों में चित्रित हुई हैं।शिवानी ने बड़ी सच्चाई, ईमानदारी के साथ सामाजिक,आर्थिक, पारिवारिक, समस्याओं को उभार कर पाठकों के समक्ष रखा है।ऐसी समस्याओं को व्यक्त करने मेंउन्होंने कभी सच्चाई से मुँह नहीं मोड़ा।

अर्थ मानव जीवन की अति महत्वपूर्ण आवश्यकता है। पारिवारिक,सामाजिक,राजनैतिक या धार्मिक सभी क्षेत्रों में अर्थ आवश्यक है। अर्थ से ही इंसान की प्रतिष्ठा, संबंध बनते–बिगड़ते हैं। विकास– उन्नति–अवनति होती है। पारिवारिकसंबंध भी अर्थ से ही बनते बिगड़ते हैं।इसलिए अर्थ की महत्ता को ।आवश्यकता को कोई नकार नहीं सका।अर्थ के अभाव में, मूल्यहीनता, लालच,चोरी,हत्या, शोषण आदि समस्याएँभी उत्पन्न होती हैं।आर्थिक संपन्नता से व्यक्ति की निजी,व्यक्तिगत जीवन में भी परिवर्तन होता रहता है।

संक्षेप में कहें पूरा दोष ना तो पुरुषों का है और न स्त्रियों का।परिवेश, संस्कार और पुरुष प्रधान समाज की मानसिकता ने स्त्री पुरुष दोनों की विचारधारा को निश्चित दायरों में बाँध दिया है। इस संबंध में नारी या तो पुरुष पर सर्वस्व न्योछावर करने और सामाजिक अन्याय सहती जाने की परंपरागत भूमिका निभाती है या दमन के विरुद्ध विद्रोह का रुख अपनाती है अन्याय सहना जड़ता की निशानी है और विद्रोह विध्वंस का रूप आवश्यकता इस बात की है कि संतुलित दृष्टिकोण से मानसिकता को बदलने का प्रयास किया जाए लड़कर नारी आज नर (या नारी) से कुछ नहीं पा सकती। न अकेला पुरुष–जीवन सार्थक है ना अकेला स्त्री– जीवन दोनों एक दूसरे के पूरक हैं– फिर भी किसी एक का दमन हुआ है। एक से अधिक लड़कियों से संबंध रखने वाले युवक भी शादी के समय समझदार, प्रगतिशील शिक्षित पत्नी की चाह छोड़कर घरेलू–गृहणी जैसी पत्नी को पसंद करता है, इसमें पितृसत्तात्मक परिवार व्यवस्था में सदियों से निहित भेद कारण भूत हैं।

21वीं सदी की पूर्व संध्या में नारी ने दीनता का रोना प्रायः बंद कर दिया है, उसका स्थान जीवन संघर्षों ने ले लिया है। उसकाअबलापन बेचारगी, प्रतिशोध और विद्रोह में बदल गया है। समस्याओं को सुलझाना और उन्हें भूल जाना भी उसने सीख लिया है बदला लेने और प्रेम करने में वह पुरुष से कहीं आगे निकल गई है।अब शादी अगर हादसा बन जाए तो उसे पुराने कोट की तरह उतार फेंका जा सकता है।जीवन की ट्रेजडी भी उसने ट्रेजडी धार्मिक रूप में लेना सीख लिया है।

आगामी दशक की युवतीवर्तमान दशकों की बालिका है अपने बाल्यकाल में उसने जो संस्कार और अनुभव प्राप्त किए हैं– उन्हीं की आधारशिला पर उसके भविष्य का निर्माण होगा। अन्य देशों के ज्ञान विज्ञान उसके लिएत्याज्यनहीं होंगे यह सत्य है, किंतु भारत की धरती से उसका संबंध विच्छिन्न नहीं हो सकता।राजनीति, सामाजिक,आर्थिक अस्त्रों पर उसकी स्थिति आज की महिला से उच्चतर होनी अनिवार्य है।

युगों से दलित पीड़ित रहने के कारण जोहीनता के संस्कार बन गए थे, उन्हें आधुनिक भारतीय महिला ने अपने रक्त एवं प्रस्वेद से इस प्रकार धो दिया है कि आगामी युग की महिला को उस पर कोई रंग नहीं चढ़ाना पड़ेगा।

भारतीय महिला का भविष्य जानने की जिज्ञासा होना स्वाभाविक है। भारतीय महिला के मुख्य विकास में दो बाधाएँ हैं प्रतिक्रियावादी सामाजिक संस्थाए तथा रूढिगत रिवाज। जैसा कि पहले कहा जा चुका है, कानून की दृष्टि से महिला की स्थिति पुरुष से के समकक्ष है, किंतु दैनिक व्यवहार में जातिपितृसत्तात्मक परिवार संस्था धार्मिक परंपराएँ तथा सत्तावादी मूल्यों का प्रभाव अभी बहुत व्यापक है तथा सब ओरपुरुष के प्रभुत्व दिखाई पड़ता है।

उपसंहार–

इस प्रकार नवजाग्रतमहिलाओं का कर्तव्य है कि वे इन प्रतिक्रियावादी तत्वों के कारणों को ढूँढ कर उन्हें निर्मल करने का प्रयास करें।स्वयं अर्जित स्वतंत्रता को सामाजिक संस्थात्मक प्रतिक्रियावादी शक्तियाँ बेकार ना बना दें इसके लिए भी सतर्क एवं सावचेत रहना है दुनिया की प्रसिद्ध स्त्रियों ने नारियोकीयातनाओंको मिटाने के लिए नारी– चेतना को जागृति पर विशेष बल दिया तथा अपनी रचनाओं के माध्यम से स्त्री– पुरुष के समान महत्व को उजागर करते हुए स्वस्थ समृद्ध व सुसंस्कृत समाज की संरचना में अपना विशेष योगदान दिया।

संदर्भ ग्रंथ सूची–

[1]. भारतीय महिलाओं का समाजशास्त्र– डॉ. एम.एम. लवानिया

[2]. भारतीय समाज में नारी– डॉ. नीरा देसाई

[3]. हिंदी साहित्य का आधा इतिहास– डॉ. सुमन राजे

[4]. महादेवी वर्मा साहित्य समग्र–3– सं. – निर्मला जैन